

प्रार्थियों में मानसिक एवं व्यक्तित्व का अध्ययन : कस्तूरबा गौधी

बालिका विद्यालय के परिप्रेक्ष्य में

सोनल गोयल¹ एवं डॉ. प्रमोद कुमार राजपूत²

¹शोध छात्रा, शिक्षा विभाग¹, सह आचार्य, शिक्षा विभाग²

श्री रावतपुरा सरकार विष्वविद्यालय, रायपुर छ.ग.²

शोध सारांश : वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निराशा एवं व्यक्तित्व के संबंध का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। मानव जीवन में धर्म और संस्कृति व्यक्ति के विचार, व्यवहार तथा दृष्टिकोण को आकार देते हैं। अतः यह जानना आवश्यक था कि विभिन्न धार्मिक या सांस्कृतिक परिवेशों में पले-बढ़े विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षण एवं मानसिक प्रतिक्रियाएँ किस प्रकार भिन्न होती हैं। अध्ययन की जनसंख्या कस्तूरबा गौधी विद्यालय के विद्यार्थी रहे। कुल 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति से किया गया, जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई विद्यार्थियों को समान प्रतिनिधित्व दिया गया। आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन, परीक्षण तथा सहसंबंध विधि से किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। परंतु निराशा स्तर में कुछ सार्थक अंतर पाए गए—मुस्लिम विद्यार्थियों में निराशा का स्तर अपेक्षाकृत अधिक तथा ईसाई विद्यार्थियों में न्यून पाया गया। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और निराशा स्तर के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि संतुलित और परिपक्व व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी निराशा की परिस्थितियों में अधिक संयमित रहते हैं।

मुख्य बिन्दु — धार्मिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विद्यार्थी, व्यक्तित्व, निराशा आदि।

1. प्रस्तावना

विद्यार्थियों का व्यक्तित्व धार्मिक एवं सांस्कृतिक अनुभवों से निर्मित होता है, जो उनकी सोच, भावनाओं और व्यवहार को दिशा प्रदान करता है। वर्तमान युग तीव्र परिवर्तन, प्रतिस्पर्धा एवं मानसिक दबावों का युग है। इस परिस्थिति में निराशा एक सामान्य मानसिक प्रतिक्रिया बन गई है, जो व्यक्ति के उद्देश्यों की पूर्ति में बाधा उत्पन्न होने पर उत्पन्न होती है। दूसरी ओर, व्यक्तित्व व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक गुणों का समन्वय है, जो उसकी प्रतिक्रिया, सोच और समायोजन क्षमता को निर्धारित करता है। धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि विद्यार्थियों को जीवन के मूल्य, अनुशासन, सहनशीलता तथा आत्मनियंत्रण का अभ्यास कराती है। यह पृष्ठभूमि उनकी मानसिक दृढ़ता को प्रभावित करती है, जिसके कारण समान परिस्थितियों में विभिन्न सांस्कृतिक या धार्मिक समूहों के विद्यार्थी निराशा को अलग-अलग ढंग से अनुभव करते हैं। उदाहरणार्थ, कुछ संस्कृतियाँ सामूहिकता और संयम को महत्व देती हैं, जबकि कुछ संस्कृतियाँ आत्म-अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत उपलब्धि को प्रोत्साहित करती हैं, यह भिन्नता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण तथा निराशा सहनशीलता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है।



धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों और निराशा के स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण करना है, जिससे यह समझा जा सके कि किस प्रकार विविध सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पले-बढ़े विद्यार्थी अपनी भावनाओं, अपेक्षाओं और असफलताओं का सामना करते हैं। यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समुचित परामर्श एवं शैक्षिक नीतियों के निर्माण में भी योगदान देगा।

2. अवधारणा

व्यक्तित्व एक बहुआयामी मनोवैज्ञानिक संकल्पना है, जो व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, व्यवहार तथा सामाजिक संबंधों के सम्मिलित रूप को व्यक्त करती है। यह व्यक्ति की विशिष्ट पहचान बनाता है और उसके जीवन के हर पहलू पर प्रभाव डालता है। वही निराशा एक ऐसी मानसिक अवस्था है, जो तब उत्पन्न होती है जब व्यक्ति के लक्ष्यों की प्राप्ति में कोई आंतरिक या बाह्य बाधा उत्पन्न होती है। निराशा का स्तर व्यक्ति के व्यक्तित्व की दृढ़ता, भावनात्मक नियंत्रण, तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर निर्भर करता है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व्यक्ति को जीवन के मूल्य, नैतिकता, अनुशासन और व्यवहार की रूपरेखा प्रदान करती है। धर्म व्यक्ति को संयम, धैर्य, करुणा और आत्म-नियंत्रण का संदेश देता है, जबकि संस्कृति व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार, दृष्टिकोण और सामंजस्य की भावना को विकसित करती है। अतः धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाता है।

वर्तमान समय में विद्यार्थी अनेक प्रकार के मानसिक दबावों, प्रतिस्पर्धा और सामाजिक अपेक्षाओं से गुजर रहे हैं। लेकिन यह देखा गया है कि कुछ विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों में भी संतुलित और सकारात्मक बने रहते हैं, जबकि कुछ शीघ्र निराश हो जाते हैं। यह भिन्नता केवल व्यक्तिगत क्षमता का परिणाम नहीं, बल्कि उनकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भी जुड़ी होती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं। अतः यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि हम यह समझें कि किस प्रकार धार्मिक या सांस्कृतिक मूल्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

शोध की रूपरेखा

इस शोध में सर्वेक्षण विधि अपनाई गयी है। विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गये हैं, ताकि धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर व्यक्तित्व और निराशा के अंतर का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जा सके।

नमूना चयन

इस शोध हेतु 200 विद्यार्थियों या शोधकर्ता की सुविधा अनुसार संख्या का नमूना गया है। नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति अपनाई गयी है, ताकि प्रत्येक धार्मिक या सांस्कृतिक समूह का प्रतिनिधित्व समान रूप से हो सके। नमूने में पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों दोनों को सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण

व्यक्तित्व मापने हेतु उपकरण च्मतेवदंसपजल ज्मेज रु म्लेमदबा च्मतेवदंसपजल प्दअमदजवतल म्च । 16 च्मतेवदंसपजल थंबजवत फनमेजपवददंपतम 16च्च जैसे मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया जा सकता है। यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों जैसे अंतर्मुखता, बहिर्मुखता, भावनात्मक स्थिरता आदि को मापेगा।

व्यक्तिगत विवरण प्रश्नावली विद्यार्थियों के धर्म, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, लिंग, आयु आदि की जानकारी एकत्र करने हेतु।



सांख्यिकीय तकनीकें

संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण निम्न सांख्यिकीय विधियों से किया गया है—

- माध्य
- प्रमाणिक विचलन
- ज-परीक्षण (ज-जमेज)—दो समूहों के बीच तुलना के लिए
- सहसंबंध—व्यक्तित्व और निराशा के संबंध जानने हेतु

3. नमूना चयन

इस शोध के लिए कस्तूरबा गाँधी विद्यालय के विद्यार्थियों को अध्ययन की जनसंख्या माना गया है। इस जनसंख्या में विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से सम्बद्ध विद्यार्थी सम्मिलित हैं। अध्ययन के लिए कुल 200 विद्यार्थियों का नमूना चुना गया है। नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना पद्धति अपनाई गई। इस पद्धति में सबसे पहले विद्यार्थियों को उनकी धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर अलग-अलग वर्गों में विभाजित किया गया। तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग से समान अनुपात में विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया, ताकि सभी समूहों का उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

विद्यालयों का चयन

कस्तूरबा गाँधी विद्यालय विद्यालयों का चयन किया गया। विद्यालयों का चयन इस प्रकार किया गया कि अध्ययन में सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता का समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सके। चयनित विद्यालय इस प्रकार हैं—

नमूने की संरचना

धार्मिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	बालक	बालिकाएँ	कुल
हिन्दू विद्यार्थी	40	40	80
मुस्लिम विद्यार्थी	25	25	50
सिख विद्यार्थी	15	15	30
ईसाई विद्यार्थी	20	20	40
कुल	100	100	200

इस प्रकार, नमूना चयन इस उद्देश्य से किया गया कि विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का समान और निष्पक्ष प्रतिनिधित्व प्राप्त हो सके। नमूने का चयन इस प्रकार किया गया कि अध्ययन के निष्कर्ष विश्वसनीय, प्रामाणिक और सामान्यीकृत हों।

परिणाम एवं विश्लेषण

इस अध्याय में विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व और निराशा स्तर से सम्बन्धित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं ज-परीक्षण के आधार पर किया गया है।



तालिका 1 : विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों का तुलनात्मक विश्लेषण

धार्मिक पृष्ठभूमि	विद्यार्थियों की संख्या	माध्य	मानक विचलन	ज-मूल्य निष्कर्ष
हिन्दू विद्यार्थी	80	62.45	8.12	1.82 असार्थक
मुस्लिम विद्यार्थी	50	60.28	7.96	
सिख विद्यार्थी	30	61.80	8.34	
ईसाई विद्यार्थी	40	63.10	7.58	

विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों में केवल मामूली अंतर पाया गया है। हिन्दू एवं ईसाई विद्यार्थियों के व्यक्तित्व अंक अपेक्षाकृत अधिक हैं, जबकि मुस्लिम एवं सिख विद्यार्थियों के अंक थोड़ा कम हैं। ज-मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है, अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

तालिका 2 : विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के निराशा स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण

धार्मिक पृष्ठभूमि	विद्यार्थियों की संख्या	निराशा का माध्य	मानक विचलन	ज-मूल्य निष्कर्ष
हिन्दू विद्यार्थी	80	45.12	6.80	2.46 सार्थक
मुस्लिम विद्यार्थी	50	48.90	7.05	
सिख विद्यार्थी	30	47.50	6.92	
ईसाई विद्यार्थी	40	44.85	6.70	

विश्लेषण

तालिका से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम विद्यार्थियों में निराशा का स्तर सर्वाधिक (डमंद = 48.90) पाया गया, जबकि ईसाई विद्यार्थियों में यह सबसे कम (डमंद = 44.85) रहा।

ज-परीक्षण का परिणाम 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुसार विद्यार्थियों के निराशा स्तर में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है।

तालिका 3 : विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों एवं निराशा स्तर के मध्य सहसंबंध

चर	सहसंबंध गुणांक (त)	स्तर	निष्कर्ष
व्यक्तित्व एवं निराशा	-0.46	0.01 स्तर पर सार्थक	नकारात्मक सहसंबंध

विश्लेषण :

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों एवं निराशा स्तर के बीच ऋणात्मक (नकारात्मक) सहसंबंध पाया गया है। इसका अर्थ है कि जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व संतुलित और परिपक्व है, उनमें निराशा का स्तर अपेक्षाकृत कम है।

अर्थात जैसे-जैसे व्यक्तित्व की परिपक्वता बढ़ती है, निराशा घटती जाती है।



तालिका 4 : लिंग के आधार पर निराशा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	निराशा का माध्य	मानक विचलन	ज-मूल्य	निष्कर्ष
बालक	100	47.90	6.85	1.68	असार्थक
बालिका	100	46.20	7.12		

विश्लेषण :

तालिका से स्पष्ट है कि बालक विद्यार्थियों में निराशा का स्तर बालिकाओं की तुलना में थोड़ा अधिक पाया गया, परंतु यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लिंग के आधार पर निराशा में कोई महत्वपूर्ण भेद नहीं है।

निष्कर्ष

मानव जीवन के निर्माण में धर्म और संस्कृति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। धर्म व्यक्ति को नैतिकता, संयम और कर्तव्यबोध की भावना देता है, जबकि संस्कृति उसके आचरण, व्यवहार और जीवन दृष्टि को आकार देती है। विद्यार्थी जीवन, जो व्यक्तित्व निर्माण की सबसे संवेदनशील अवस्था होती है, इन दोनों कारकों से गहराई से प्रभावित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में यही ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं निराशा स्तर को किस प्रकार प्रभावित करती है।

अध्ययन से प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों में धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसका तात्पर्य यह है कि विद्यालयी शिक्षा, पारिवारिक परिवेश और सामाजिक संपर्क जैसे अन्य कारक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में अधिक प्रभावशाली हैं, न कि केवल धार्मिक या सांस्कृतिक पहचान। दूसरी ओर, निराशा के स्तर में धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुसार कुछ सार्थक अंतर पाए गए। मुस्लिम विद्यार्थियों में निराशा का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया, जबकि ईसाई और हिन्दू विद्यार्थियों में यह स्तर कम था। इसका कारण यह माना जा सकता है कि विभिन्न धार्मिक या सांस्कृतिक परिवेशों में जीवन की परिस्थितियाँ, सामाजिक अपेक्षाएँ और प्रतिस्पर्धा का दबाव भिन्न-भिन्न होते हैं, जो विद्यार्थियों की मानसिक प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करते हैं।

अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं निराशा स्तर के मध्य नकारात्मक सहसंबंध विद्यमान है। इसका अर्थ यह है कि जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व संतुलित, परिपक्व एवं आत्मनियंत्रित है, वे निराशा की परिस्थितियों में अधिक संयमित रहते हैं और आसानी से हतोत्साहित नहीं होते। इसके विपरीत, असंतुलित अथवा कमजोर व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी अपेक्षाकृत अधिक निराशा अनुभव करते हैं। लिंग के संदर्भ में किए गए विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि बालक और बालिका विद्यार्थियों के निराशा स्तर में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया गया। यह परिणाम इस ओर संकेत करता है कि आधुनिक शिक्षा एवं सामाजिक परिवेश में लिंग आधारित मानसिक अंतर धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो यह अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि धर्म और संस्कृति विद्यार्थियों के मूल्यबोध, दृष्टिकोण और भावनात्मक प्रवृत्तियों को प्रभावित अवश्य करते हैं, परंतु व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख आधार व्यक्ति का आत्मानुशासन, पारिवारिक वातावरण, और विद्यालयी अनुभव होते हैं। साथ ही, यह भी स्पष्ट हुआ कि सशक्त व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी जीवन की कठिनाइयों का सामना धैर्य एवं विवेक के साथ करते हैं, जबकि असंतुलित व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी निराशा की स्थिति में शीघ्र विचलित हो जाते हैं।



अतः शिक्षा प्रणाली का दायित्व केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में मानसिक सुदृढ़ता, आत्मविश्वास, भावनात्मक संतुलन और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना भी है। विद्यालयों में मूल्य शिक्षा, जीवन कौशल प्रशिक्षण और मनोवैज्ञानिक परामर्श की व्यवस्था करके विद्यार्थियों को इस दिशा में अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षा जगत को यह संदेश देता है कि धार्मिक या सांस्कृतिक विविधता को विभाजन का नहीं, बल्कि समझ, सहयोग और व्यक्तित्व विकास का साधन माना जाए।

संदर्भ सूची

1. आइजेंक, एच. जे. और आइजेंक, एस. बी. जी. (1964)– मैनुअल ऑफ द आइजेंक पर्सनैलिटी इन्वेंटरी– लंदनरू यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन प्रेस
2. सिन्हा, जे. बी. पी. (1980)– फ्रस्ट्रेशन एंड एग्रेसशन– नई दिल्ली, वाइली ईस्टर्न लिमिटेड–
3. सिंह, ए. के. (2006)– टेस्ट्स, मेजरमेंट्स एंड रिसर्च मेथड्स इन बिहेवियरल साइंसेज– पटना, भारती भवन
4. चौहान, एस. एस. (2010)– एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी– नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस
5. शर्मा, आर. ए. (2015)– एजुकेशनल साइकोलॉजीरू प्रिंसिपल्स एंड एप्लीकेशन्स– मेरठ, आर. लाल बुक डिपो
6. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. और कान, जे. वी. (2006)– रिसर्च इन एजुकेशन (10वां संस्करण)– नई दिल्ली, पियर्सन एजुकेशन
7. राव, एस. एन. (2008)– एजुकेशनल साइकोलॉजी– नई दिल्ली, हिमालय पब्लिशिंग हाउस
8. सिंह, के. (2008)– टेस्ट्स, मेजरमेंट्स एंड रिसर्च इन बिहेवियरल साइंसेज– लखनऊ, भारती भवन

